

⑦ भारतीय भूलोक नर्मनेस्ट अर्थ ओ प्रवृत्ति ?

⇒ **সপ্ত**

• दर्शन' भक्ति संकृत 'दम' गायु एवं एस्ट्र या जट
इला देह दर्शन भक्ति इंग्रजी अधिनियम इला Philosophy ए
द्वितीय भाष्य 'Philo' एवं 'Sophia' एवं एस्ट्र 'Philo' भाष्य जट Love
(ज्ञानावासा) एवं 'Sophia' भाष्य जट wisdom (क्रान) मुण्डा
Philosphy भक्ति चिन्ह उड़ानिये जट जप्त इला Love of wisdom ए
क्रान्ति अचि ज्ञानावासा

कमीजा दर्जन :

किंचित् दुर्भावः दुर्भावे प्रत्येक अपेण भूलका द्वारा आघात शुल किंचित्
दुर्भाव, ता किंचाच्छाद्य लग्नुम् जोषेषुम् लक्ष्यात् किंचित् दुर्भाव द्वयला
भूल्याहन् विग्रहात् विविष्टम् विष्णादि सम्भावा भवान् प्रस्त्रैः उप
दिप्तैः शात्.

मानव जीवने लम्बाकृ रोक गए, अच्छम जावे
जिम्मा भए दार्भालिका नीचिठि अपेणाक, जिम्मा दर्भन वर्ता.

मिमा राण ज्ञ. उड्डू

मिरा दर्भले जाका दिते जिते वलन “मिरा दर्भन शुला
दर्भले एको लायसा दर्भ दिका हाठ घाल मिरा जापिमाह छाँ
कुन जाई शुले थाँ”

প্রযোগ :

ପ୍ରଶାନ୍ତ : ମିଥିକା ଦର୍ଶନର ଅଣ୍ଡା ଜୀବ ହଳ —

(j) অসম মুখ্য বিভাগ →

⑤ अपेक्षा भूलका विकास → मिथा दृश्य दर्शन एवं अपेक्षा
भूलका भाषण वा विकास, मिथा दृश्य दर्शन जात्यात् मिथाश्च दर्शनेन
विचित्र शुल्क वा पश्चात्यका अपेक्षा एवं.

(iii) मालिक वा व्यापक निर्धारण →

(iii) भालवा बीज विवरण → निम्न प्रमाणम् कोटि जीणन
में लिया जाता है इसके लिये शहर खाद्य एवं विभिन्न विधि
कार्य समिक्षा जारी की गयी है।

(iii) गांधी उ समाज जीवन रेक्ट्रो →

मिहा दर्भन गांधी उ समाज

जीवनका रेक्ट्रो वाले प्राणितालिंग घप्पे थाणा छाल गांधी

उपर एमन शृङ्खला अदाव वाले घप्पे ऐमने समाज सकाळ

दिल्ली उपरांठ शृङ्खला वाले वाण घप्पे

(iv) विलेघन उ सांख्योधन विभी →

मिहा दर्भन विलेघन उ

सांख्योधन विभी शृङ्खला मिहा नानान समस्या शृङ्खला एमन

विलेघन घटे ऐमन वाले समार्वानव जन्म बहुन बहुन

विलेघन सांख्योधन देश घप्पे

(v) जाच्चील लाक्षण्य →

मिहा दर्भन एकांत जाच्चील लाक्षण्य

समाज लिवर्कल जख्त सर्जति लेहे प्रतिक्षीप्त एवं लिवर्कल

घटे चलाई जाच्चीलण्य गांधी उ समाजका आवृत्ति

जाच्चील रात्रे उलाचे

(vi) (vii) जीवनका विधम निर्वाचन उ उत्तराधि →

मिहा दर्भन

एकांत जन्म लेवाई शूल जीवनका लक्ष्य निर्वाचन उ

जाव उत्तराधि एवं मार्णवम गांधी जीवन लक्ष्य एमन

निर्वाचन घप्पे ऐमने जाव लाक्ष्य विकास घटे

(viii) सांख्युसङ्कान लाक्षण्य →

मिहा दर्भन गिहाव उत्तराधि

जन्म प्रतिनिधि लाक्ष्य निश्चिना उ लाठेमन काले चलाई

फल मिहा नुच्छ विलेघन सांख्युसङ्कान मार्णवम दर्भन

मिहाका जावक गम्भीर काठे उलाचे

(ix) विकान लिंगिका →

मिहा दर्भन एकांत विकान लिंगिका

विलेघन लेवानवि लाक्षण्य उत्तराधि लिंगिका कठे मिहा

प्राणितालिंग उ सांख्योधन रात्रे घाणा

(x) मिळाळ ऊन उ अडिक्कुण अप्पोग →

मिळा दर्भनें सागाणे ऊन
उ अडिक्कुण घावशील अप्पोग छोट खाल मिळा पीऱ अडिक्कुण
कुन तळ पामा पामि घावशील मिळा लाई करूँ.

(x) मिळाळ भावुभाली शारिणी →

दृक्कन छाक्क इला मिळाळ भावुभाली
राशिणी मिळा दर्भनें माण्यम मिळाळ लम्ह, पाण्यम, पाक्कि
भुख्याला, मिळाळ लाठिप्रब्रह्मादि गोक्किंज जाणे निर्धारित उ
संस्कृत इरूँ छाणे, खाल मिळाळे अनेक एवी भावुभाली
एस्ट लाला घास.

जीवल विवाहमें दिक विविध करूँ, आळ मिळा सेव विवाहमें
अस्ति निर्वाहन करूँ खाल, मिळा दर्भन जीवल उण मिळाळ
लम्ह चिरूँ करूँ देख, उक्क मिळाळ लाठिकासना रिति
इसारे शुद्ध अन इमिण आलन घास.